रविवार 3 नवंबर, 2019

विषय — हमेशा की सजा

स्वर्ण पाठ: रोमियो 13 : 10

"प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है॥"

उत्तरदायी अध्ययन: **रोमियो** 13 : 1, 2, 7-9

1 हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की
ओर स न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं।
2 इस से जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का साम्हना करता है, और
साम्हना करने वाले दण्ड पाएंगे।
7 इसलिये हर एक का हक चुकाया करो, जिस कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए, उसे
महसूल दो; जिस से डरना चाहिए, उस से डरो; जिस का आदर करना चाहिए उसका आदर करो॥
8 आपस के प्रेम से छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है,
उसी ने व्यवस्था पूरी की है।
9 क्योंकि यह कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना; चोरी न करना; लालच न करना; और इन को
छोड़ और कोई भी आज्ञा हो तो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, कि अपने पड़ोसी से अपने
समान प्रेम रख।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. I पतरस 3 : 10 (वह)-13

10 … जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से,
और अपने होंठों को छल की बातें करने से रोके रहे।

11 वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे; वह मेल मिलाप को ढूंढ़े, और उस के यत्न में रहे।
12 क्योंकि प्रभु की आंखे धमिर्यों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उन की बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करने वालों के विमुख रहता है॥
13 और यदि तुम भलाई करने में उत्तेजित रहो तो तुम्हारी बुराई करने वाला फिर कौन है?

2. I शमूएल 25: 2, 3 (*से 2nd* ;), 4-6 (*से 3rd* ,), 9, 10 (*से 2nd* ?), 11-13 (*से 1st* .), 13 (और वहाँ) (*से* ;), 14, 17-19, 21, 23, 24 (*से 2nd* ,), 25 (*से 1st* :), 26, 32, 33, 38, 39

2 माओन में एक पुरूष रहता था जिसका माल कर्मेल में था। और वह पुरूष बहुत बड़ा था, और उसके तीन हजार भेड़ें, और एक हजार बकरियां थीं; और वह अपनी भेड़ों का ऊन कतर रहा था।
3 उस पुरूष का नाम नाबाल, और उसकी पत्नी का नाम अबीगैल था। स्त्री तो बुद्धिमान और रूपवती थी, परन्तु पुरूष कठोर, और बुरे बुरे काम करने वाला था; वह तो कालेबवंशी था।
4 जब दाऊद ने जंगल में समाचार पाया, कि नाबाल अपनी भेड़ों का ऊन कतर रहा है;
5 तब दाऊद ने दस जवानों को वहां भेज दिया, ओर दाऊद ने उन जवानों से कहा, कि कर्मेल में नाबाल के पास जा कर मेरी ओर से उसका कुशलक्षेम पूछो।
6 और उस से यों कहो, कि तू चिरंजीव रहे, तेरा कल्याण हो, और तेरा घराना कल्याण से रहे।
9 ऐसी ऐसी बातें दाऊद के जवान जा कर उसके नाम से नाबाल को सुनाकर चुप रहे।
10 नाबाल ने दाऊद के जनों को उत्तर देकर उन से कहा, दाऊद कौन है? यिशै का पुत्र कौन है? आज कल बहुत से दास अपने अपने स्वामी के पास से भाग जाते हैं।
11 क्या मैं अपनी रोटी-पानी और जो पशु मैं ने अपने कतरने वालों के लिये मारे हैं ले कर ऐसे लोगों को दे दूं, जिन को मैं नहीं जानता कि कहां के हैं?
12 तब दाऊद के जवानों ने लौटकर अपना मार्ग लिया, और लौटकर उसको ये सब बातें ज्यों की त्यों सुना दीं।
13 तब दाऊद ने अपने जनों से कहा, अपनी अपनी तलवार बान्ध लो। तब उन्होंने अपनी अपनी तलवार बान्ध ली; और दाऊद ने भी अपनी तलवार बान्घ ली; और कोई चार सौ पुरूष दाऊद के पीछे पीछे चले, और दो सौ समान के पास रह गए।
14 परन्तु एक सेवक ने नाबाल की पत्नी अबीगैल को बताया, कि दाऊद ने जंगल से हमारे स्वामी को आशीर्वाद देने के लिये दूत भेजे थे; और उसने उन्हें ललकार दिया।
17 इसलिये अब सोच विचार कर कि क्या करना चाहिए; क्योंकि उन्होंने हमारे स्वामी की ओर उसके समस्त घराने की हानि ठानी होगी, वह तो ऐसा दुष्ट है कि उस से कोई बोल भी नहीं सकता।
18 अब अबीगैल ने फुर्ती से दो सौ रोटी, और दो कुप्पी दाखमधु, और पांच भेडिय़ों का मांस, और पांच सआ भूना हुआ अनाज, और एक सौ गुच्छे किशमिश, और अंजीरोंकी दो सौ टिकियां ले कर गदहों पर लदवाई।
19 और उसने अपने जवानों से कहा, तुम मेरे आगे आगे चलो, मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हूं; परन्तु उसने अपने पति नाबाल से कुछ न कहा।

21 दाऊद ने तो सोचा था, कि मैं ने जो जंगल में उसके सब माल की ऐसी रक्षा की कि उसका कुछ भी न खोया, यह नि:सन्देह व्यर्थ हुआ; क्योंकि उसने भलाई के बदले मुझ से बुराई ही की है।
23 दाऊद को देख अबीगैल फुर्ती करके गदहे पर से उतर पड़ी, और दाऊद के सम्मुख मुंह के बल भूमि पर गिरकर दण्डवत की।
24 फिर वह उसके पांव पर गिरके कहने लगी, हे मेरे प्रभु, यह अपराध मेरे ही सिर पर हो; तेरी दासी तुझ से कुछ कहना चाहती है, और तू अपनी दासी की बातों को सुन ले।
25 मेरा प्रभु उस दुष्ट नाबाल पर चित्त न लगाए; क्योंकि जैसा उसका नाम है वैसा ही वह आप है; उसका नाम तो नाबाल है, और सचमुच उस में मूढ़ता पाई जाती है; परन्तु मुझ तेरी दासी ने अपने प्रभु के जवानों को जिन्हें तू ने भेजा था न देखा था।
26 और अब, हे मेरे प्रभु, यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, कि यहोवा ने जो तुझे खून से और अपने हाथ के द्वारा अपना पलटा लेने से रोक रखा है, इसलिये अब तेरे शत्रु और मेरे प्रभु की हानि के चाहने वाले नाबाल ही के समान ठहरें।
32 दाऊद ने अबीगैल से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिसने आज के दिन मुझ से भेंट करने के लिये तुझे भेजा है।
33 और तेरा विवेक धन्य है, और तू आप भी धन्य है, कि तू ने मुझे आज के दिन खून करने और अपना पलटा आप लेने से रोक लिया है।
38 और दस दिन के पश्चात यहोवा ने नाबाल को ऐसा मारा, कि वह मर गया।
39 नाबाल के मरने का हाल सुनकर दाऊद ने कहा, धन्य है यहोवा जिसने नाबाल के साथ मेरी नामधराई का मुकद्दमा लड़कर अपने दास को बुराई से रोक रखा; और यहोवा ने नाबाल की बुराई को उसी के सिर पर लाद दिया है। तब दाऊद ने लोगों को अबीगैल के पास इसलिये भेजा कि वे उस से उसकी पत्नी होने की बातचीत करें।

3. रोमियो 12 : 1, 2, 9-21

1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।
2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥
9 प्रेम निष्कपट हो; बुराई से घृणा करो; भलाई मे लगे रहो।
10 भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर दया रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।
11 प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरो रहो; प्रभु की सेवा करते रहो।
12 आशा मे आनन्दित रहो; क्लेश मे स्थिर रहो; प्रार्थना मे नित्य लगे रहो।
13 पवित्र लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उस में उन की सहायता करो; पहुनाई करने मे लगे रहो।
14 अपने सताने वालों को आशीष दो; आशीष दो श्राप न दो।

15 आनन्द करने वालों के साथ आनन्द करो; और रोने वालों के साथ रोओ।
16 आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।
17 बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उन की चिन्ता किया करो।
18 जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।
19 हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा।
20 परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।
21 बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई का जीत लो॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. **35 : 30 केवल**

प्रेम का डिजाइन पापी को सुधारना है।

2. **9 : 9-14**

क्रिश्चियन साइंस के फिजिकल हीलिंग अब परिणाम है, यीशु के समय के अनुसार, ईश्वरीय सिद्धांत के संचालन से, इससे पहले कि पाप और बीमारी मानवीय चेतना में अपनी वास्तविकता खो देते हैं और स्वाभाविक रूप से गायब हो जाते हैं और आवश्यक रूप से अंधेरा प्रकाश और पाप को सुधार के लिए जगह देता है।

3. **5 : 3-15 (से *1st* .), 18-21**

गलत काम के लिए दु:ख है, लेकिन सुधार की दिशा में एक कदम और बहुत आसान कदम है। ज्ञान द्वारा आवश्यक अगला और महान कदम हमारी ईमानदारी की परीक्षा है, - अर्थात्, सुधार। इसके लिए हमें परिस्थितियों के तनाव में रखा गया है। प्रलोभन बोली हमें अपराध को दोहराती है, और जो किया जाता है उसके बदले में आ जाता है। इसी तरह यह हमेशा रहेगा, जब तक हम यह नहीं सीख लेते कि न्याय के कानून में कोई छूट नहीं है और हमें "पूरी तरह से" भुगतान करना होगा। जिस नाप से तुम नापते हो, "उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा" और यह भरा जाएगा "और ऊपर चल रहा होगा।"

संतों और पापियों को उनका पूरा पुरस्कार मिलता है, लेकिन हमेशा इस दुनिया में नहीं। ... पापी पनपते हैं "हरे भरे वृक्ष की तरह;" लेकिन, आगे बढ़ते हुए, भजनहार अपना अंत देख सकता था; कष्ट से पाप का नाश।

4. **22 : 11-22, 30-4**

"अपने स्वयं के उद्धार का काम करें," यह जीवन और प्रेम की मांग है, इस अंत के लिए भगवान आपके साथ काम करते हैं। "जब तक मैं न आऊं तब तक दृढ़ रहना!" अपने इनाम की प्रतीक्षा करें, और "अच्छा करने में थके नहीं। यदि आपके प्रयास भयभीत बाधाओं से घिरे हुए हैं, और आपको कोई वर्तमान इनाम नहीं मिलता है, तो गलती पर वापस न जाएं, और न ही दौड़ में सुस्त बनें।

जब लड़ाई का धुआं दूर हो जाएगा, तो आप अपने द्वारा किए गए अच्छे को समझेंगे, और अपने योग्य के अनुसार प्राप्त करेंगे। प्रेम हमें प्रलोभन देने के लिए जल्दी में नहीं है, क्योंकि प्रेम का अर्थ है कि हमें कोशिश और शुद्ध करना होगा।

न्याय के लिए पापी के सुधार की आवश्यकता है दया ऋण को तभी रद्द करती है जब न्याय स्वीकृत होता है। बदला बेवजह है। क्रोध जो केवल तुष्ट होता है, नष्ट नहीं होता, बल्कि आंशिक रूप से लिप्त होता है। हमें पाप से बचाने के लिए बुद्धि और प्रेम के लिए स्वयं के कई बलिदानों की आवश्यकता हो सकती है। एक बलिदान, हालांकि, महान, पाप के ऋण का भुगतान करने के लिए अपर्याप्त है।

5. 327 : 1-16, 22-13

सुधार यह समझने से होता है कि बुराई में कोई खुशी नहीं है, और विज्ञान के अनुसार अच्छे के लिए स्नेह प्राप्त करने से भी, जो अमर तथ्य को उजागर करता है कि न तो खुशी और न ही दर्द, भूख और न ही जुनून, या बात में मौजूद हो सकता है, जबकि दिव्य मन आनंद और पीड़ा, या भय और मानव मन के सभी पापी भूखों की झूठी मान्यताओं को नष्ट कर सकता है।

बदला लेने की खुशी में, क्या दयनीय दृष्टि दुर्भावना है! बुराई कभी-कभी किसी व्यक्ति के अधिकार की सबसे बड़ी अवधारणा होती है, जब तक कि अच्छाई पर उसकी पकड़ मजबूत नहीं हो जाती। तब वह दुष्टता में आनंद खो देता है, और यह उसकी पीड़ा बन जाती है। पाप के दुख से बचने का तरीका है, पाप को रोकना। और कोई रास्ता नहीं है। पाप जानवर की छवि है जो पीड़ा के पसीने से बह जाता है। यह एक नैतिक पागलपन है जो आधी रात और तड़के के साथ घूमने के लिए आगे बढ़ता है।

सजा के डर ने कभी भी इंसान को सही मायने में ईमानदार नहीं बनाया। गलत को पूरा करने और सही की घोषणा करने के लिए नैतिक साहस की आवश्यकता होती है। लेकिन हम उस आदमी को कैसे सुधारेंगे जिसके पास नैतिक साहस से अधिक जानवर हैं, और अच्छे का सही विचार किसके पास नहीं है? मानव चेतना के माध्यम से, भौतिक लाभ के लिए अपनी गलती के नश्वर को खुशी पाने के लिए मनाएं कारण सबसे सक्रिय मानव संकाय है।

यह बताएं कि भावनाओं को सूचित करें और नैतिक दायित्व के प्रति व्यक्ति की निष्क्रिय भावना को जागृत करें, और डिग्री के आधार पर वह मानव भावना के सुख और आध्यात्मिकता की भव्यता और आनंद की कुछ नहीं सीखेंगे जो सामग्री या कॉर्पोरल को शांत करता है तब वह न केवल बच जाएगा, बल्कि बच जाता है।

मनुष्यों का मानना है कि वे अच्छाई के बिना रह सकते हैं, जब भगवान अच्छा है और एकमात्र वास्तविक जीवन है। इसका परिणाम क्या है? दिव्य सिद्धांत के बारे में बहुत कम समझना जो बचाता है और ठीक करता है, नश्वर पाप, बीमारी, और मृत्यु से केवल विश्वास में छुटकारा पाते हैं। इन त्रुटियों को वास्तव में नष्ट नहीं किया जाता है, और इसलिए जब तक, यहाँ या उसके बाद नश्वर लोगों से चिपके रहना चाहिए, वे विज्ञान में भगवान की सच्ची समझ हासिल करते हैं जो उसके बारे में मानव भ्रम को नष्ट कर देता है और उसकी सहयोगीता की भव्य वास्तविकताओं को प्रकट करता है।

6. **19 : 24-28**

जो लोग प्रदर्शन नहीं कर सकते, कम से कम भाग में, हमारे गुरु की शिक्षाओं और अभ्यास के दिव्य सिद्धांत का भगवान में कोई हिस्सा नहीं है। यदि उसके प्रति अवज्ञा में रहते हैं, तो हमें कोई सुरक्षा महसूस नहीं करनी चाहिए, हालांकि भगवान अच्छा है।

7. **404 : 9-25**

एक भ्रष्ट दिमाग एक भ्रष्ट शरीर में प्रकट होता है। वासना, द्वेष, और सभी प्रकार की बुराई रोगग्रस्त विश्वास हैं, और आप उन्हें केवल उन दुष्ट उद्देश्यों को नष्ट करके नष्ट कर सकते हैं जो उन्हें उत्पन्न करते हैं। यदि पश्चाताप नश्वर मन में बुराई खत्म हो गई है, जबकि इसका प्रभाव अभी भी व्यक्ति पर बना हुआ है, तो आप इस विकार को दूर कर सकते हैं क्योंकि भगवान का कानून पूरा हो गया है और अपराध को रद्द कर देता है। स्वस्थ पापी कठोर पापी होता है।

स्वभाव में सुधार, हमारी भूमि पर महसूस किया गया, मेटाफिजिकल हीलिंग के परिणाम हैं, जो हर उस पेड़ को काट देता है जो अच्छे फल नहीं देता है। यह विश्वास, कि पाप में कोई वास्तविक आनंद नहीं है, ईसाई विज्ञान के धर्मशास्त्र में सबसे महत्वपूर्ण बिंदुओं में से एक है। पापी के इस नए और सच्चे दृष्टिकोण के बारे में जानने के लिए, उसे दिखाओ कि पाप कोई खुशी नहीं देता है, और यह ज्ञान उसके नैतिक साहस को मजबूत करता है और बुराई करने और अच्छे से प्यार करने की उसकी क्षमता को बढ़ाता है।

8. 405 : 29-32

पाप-बोध के दर्द उसके सुख से कम हानिकारक नहीं हैं। भौतिक दुखों में विश्वास करने से मनुष्य को अपनी त्रुटि से पीछे हटना पड़ता है, शरीर से आत्मा की ओर भागना पड़ता है, और स्वयं के बाहर दिव्य स्रोतों से अपील करना पड़ता है।

9. **239 : 18-22**

यदि ईश्वरीय प्रेम हमारे निकट, प्रिय, और अधिक वास्तविक होता जा रहा है, तो यह बात आत्मा को सौंप रही है। जिन वस्तुओं का हम पीछा करते हैं और जो आत्मा हम प्रकट करते हैं वह हमारे दृष्टिकोण को प्रकट करती है, और दिखाती है कि हम क्या जीत रहे हैं।

10. 252 : 7-14

जब झूठे मानव विश्वासों को अपने स्वयं के मिथ्यात्व से थोड़ा भी सीखते हैं, तो वे गायब होने लगते हैं। त्रुटि और उसके संचालन का ज्ञान पूर्व में होना चाहिए कि सत्य की समझ, जो त्रुटि को नष्ट कर देती है, जब तक कि पूरी नश्वर, भौतिक त्रुटि समाप्त नहीं हो जाती है, और शाश्वत सत्यता, मानव द्वारा और आत्मा के द्वारा बनाई गई, समझ और उसकी वास्तविक समानता के रूप में पहचानी जाती है निर्माता।

11. 248 : 29-32

निःस्वार्थता, अच्छाई, दया, न्याय, स्वास्थ्य, पवित्रता, प्रेम - स्वर्ग का राज्य - हमारे भीतर राज करो, और पाप, बीमारी, और मृत्यु तब तक कम हो जाएगी जब तक वे अंततः गायब नहीं हो जाते।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6